**CBSE Class 10th Hindi A**

**Sample Paper - 07**

**Maximum Marks: 80**

**Time Allowed: 3 hours**

## General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

## Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   किसी भी जीव के शरीर और मानस के सबसे ऊपर मस्तिष्क है। इस मस्तिष्क का स्वभाव कैसे तय होता है? बुद्धि में होने वाले विचार से तय होता है इसका मतलब यह है कि किसी भी व्यक्ति के वंशानुगत स्वभाव को उसकी बुद्धि, उसका विवेक बदल सकता है। इसका मतलब यह है कि हमारे बर्ताव, हमारे कर्म पर हमारा वश है चाहे दुनिया भर पर न भी हो। हम अपने स्वभाव को अपनी बुद्धि में बारीक बदलाव लाकर बदल सकते हैं इसके लिए मस्तिष्क की रूप रेखा पर एक नजर दौड़ानी होगी।

   हमारे मस्तिष्क के दो विभिन्न अंश हैं: चेतन और अवचेतन। दोनों ही अलग-अलग प्रयोजनों के लिए जिम्मेदार हैं और दोनों के सीखने के तरीके भी अलग-अलग हैं। मस्तिष्क का चेतन भाग हमें विशिष्ट बनाता है, वही हमारी विशिष्टता है। इसकी वजह से एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से अलग होता है। हमारा कुछ अलग-सा स्वभाव, हमारी कुछ अनोखी सृजनात्मक शक्ति । ये सब मस्तिष्क के इसी हिस्से से संचालित होती हैं, तय होती हैं। हर व्यक्ति की चेतन रचनात्मकता ही उसकी मनोकामना, उसकी इच्छा और महत्त्वाकांक्षा तय करती है।

   इसके विपरीत मस्तिष्क का अवचेतन हिस्सा एक ताकतवर प्रतिश्रुति यंत्र जैसा ही है। यह अब तक के रिकॉर्ड किए हुए अनुभव दोहराता रहता है। इसमें रचनात्मकता नहीं होती। यह उन स्वचलित क्रियाओं और उस सहज स्वभाव को नियंत्रित करता है, जो दुहरा-दुहराकर, हमारी आदत का एक हिस्सा बन चुका है। यह जरूरी नहीं है कि अवचेतन दिमाग की आदतें और प्रतिक्रियाएँ हमारी मनोकामनाओं या हमारी पहचान पर आधारित हों । दिमाग का यह हिस्सा अपने जन्म के थोड़े पहले, माँ के पेट में ही सीखना शुरू कर देता है जैसे जीवन के चक्रव्यूह' में उतरने से पहले ही 'अभिमन्यु' पाठ सीखने लगा हो । यहाँ से लेकर सात साल की उम्र तक वे सारे कर्म और आचरण हमारे दिमाग का यह अवचेतन हिस्सा

सीख लेता है जो भावी जीवन के लिए मूल आधार हैं।

i. हम अपने स्वभाव को कैसे परिवर्तित कर सकते हैं?
ii. हमारे मस्तिष्क के कौन-कौन से अंश होते हैं?
iii. मस्तिष्क के चेतन भाग का क्या कार्य है?
iv. अवचेतन मस्तिष्क से क्या अभिप्राय है?
v. लेखक अभिमन्यु के माध्यम से क्या प्रतिपादित करना चाहता है?
vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

## Section B

2. **निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद लिखिए- (4)**

i. मैंने एक कविता लिखी जिसकी प्रशंसा सभी ने की।
ii. यहाँ पहले जंगल था, परन्तु अब घनी बस्ती है।
iii. सभी लोगों ने वह सुन्दर दृश्य देखा।
iv. सभी ने उस हमले की निंदा की जो आतंकवादियों द्वारा किया गया था।

3. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए- (4)**

i. मैनाओं ने गीत सुनाया। (कर्मवाच्य में)
ii. माँ अभी भी खड़ी नहीं हो पाती। (भाववाच्य में)
iii. बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)
iv. क्या अब चला जाए? (कर्तृवाच्य में)

4. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए- (4)**

i. <u>मैं</u> कल देहरादून जाऊँगा।
ii. पिछले <u>साल</u> भयंकर सूखा पड़ा था।
iii. <u>तुम्हारी</u> पुस्तकें मैंने अलमारी में रख दी हैं।
iv. हरीश की <u>किताबें</u> अस्त-व्यस्त रहती हैं।

5. **निम्न प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. 'श्रृंगार रस' का आलम्बन विभाव लिखिए।
ii. 'रौद्ररस' का अनुभाव लिखिए।
iii. 'जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई' में कौन-सा रस है?
iv. “हँसी' किस रस का स्थायी भाव है?

## Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-जिन्दगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है। दुःखी हो गए। पन्द्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ही ख्याल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।..... क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया।..... और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको ! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

i. हालदार साहब की दृष्टि से कैसी कौम देश को अहित करने वाली होती है?
ii. हालदार साहब के मन में कस्बे में घुसने से पहले क्या ख्याल आया?
iii. हालदार साहब के दुःखी होने का क्या कारण था?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. बालगोबिन भगत पतोह के पुनर्विवाह के रूप में समाज की किस समस्या का समाधान प्रस्तुत करना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

ii. नवाब साहब ने अपनी नवाबी का परिचय किस प्रकार दिया? 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर लिखिए।

iii. फादर जैसे सौम्य तथा स्नेहिल स्वभाव के व्यक्ति किस सवाल पर झुजला उठते थे और क्यों ? 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

iv. मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व में उनके पिताजी का क्या प्रभाव दिखाई पड़ता है?

v. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्यों माँगते रहे और क्यों ?

8. **निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखें- (6)**

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार ।

धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥

i. उपर्युक्त पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गयी हैं ?

ii. इन पंक्तियों के द्वारा कौन किसे और क्या चेतावनी दे रहा है ?

iii. धनुष की किस विशेषता की ओर संकेत किया है और क्यों ?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. 'उड़ने को नभ में तुम, पर-पर कर देते हो'-कथन में कवि क्या कहना चाहता है?

    ii. कवि ने बच्चे के शरीर की तुलना किससे की है और क्यों ?

    iii. कवि के अनुसार दुविधाग्रस्त व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक स्थिति कैसी होती है? 'छाया मत छूना' पाठ को केन्द्रित रखकर लिखिए।

    iv. 'कन्यादान' कविता में किसके दुःख की बात की गई है और क्यों?

    v. 'संगतकार' कविता में 'नौसिखिया' से क्या अभिप्राय है? उसका गला कब सँध जाता है?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

    i. लेखक किस घटना को याद कर कहता है कि वैसा घोड़मुँहा आदमी हमने कभी नहीं देखा? माता का अँचल पाठ के आधार पर बताइए।

    ii. रानी ऐलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का क्या कारण था ? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्क-संगत ठहराएँगे ?

    iii. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं? जीवन मूल्यों की दृष्टि से लिखिए।

## Section D

11. **जीवन की प्रबल अभिलाषा** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए। **(10)**

    - मेरी आकांक्षा
    - आवश्यक योग्यता
    - तैयारी।

**OR**

मेरे जीवन का लक्ष्य विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- लक्ष्य क्या है?
- क्यों चुना?
- कैसे पूरा करेंगे?
- बनकर क्या करेंगे?

**OR**

**जीवन की प्रबल अभिलाषा** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- मेरी आकांक्षा
- आवश्यक योग्यता
- तैयारी।

12. मित्र की माता के आकस्मिक निधन पर एक संवेदना पत्र लिखिए। **(5)**

**OR**

अपने नए विद्यालय के परिवेश और शैक्षिक-शैक्षणिक गतिविधियाँ का उल्लेख करते हुए चचेरे भाई को पत्र लिखिए।

13. फेस क्रीम विक्रेता के लिए एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में बनाइए। **(5)**

**OR**

नाखूनों की सुंदरता बढ़ाने के लिए नेलपॉलिश का विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में बनाइए।

**CBSE Class 10th Hindi**

**Sample Paper - 07**

## Answer

## Section A

1. i. अपनी बुद्धि -विवेक में सूक्ष्म परिवर्तन लाकर हम अपने स्वभाव को परिवर्तित कर सकते हैं।
   ii. हमारे मस्तिष्क के दो विभिन्न अंश होते हैं-चेतन और अवचेतन। दोनों ही अलग-अलग प्रयोजनों के लिए जिम्मेदार हैं। एक जाग्रत रहता है तो दूसरा सुषुप्तावस्था में रहता है।
   iii. मस्तिष्क का चेतन भाग हमें विशिष्ट बनाता है। इसकी वजह से एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से अलग होता है। हमारी कछ अलग-सा स्वभाव, अनोखी सृजनात्मक शक्ति, रचनात्मकता आदि कार्यों की जिम्मेदारी चेतन मस्तिष्क की ही होती है। यही चेतन मन एक को दूसरे से पृथक कर विशिष्ट बना देता है।
   iv. अवचेतन मस्तिष्क एक ताकतवर प्रतिश्रुति यंत्र के समान होता है। यह जीवन के प्रारम्भिक दिनों से लेकर अब तक के रिकॉर्ड किए अनुभवों को दोहराता है। इसमें रचनात्मकता नहीं होती। यह उन स्वचालित क्रियाओं और सहज स्वभाव को भी नियंत्रित करता है जो हमारी आदत बन चुका है।
   v. लेखक अभिमन्यु की चर्चा के माध्यम से यह प्रतिपादित करना चाहता है कि अवचेतन मस्तिष्क जन्म के थोड़े पहले माँ के पेट में ही सीखना शुरु कर देता है। उस समय उसे सही-गलत का ज्ञान नहीं होता केवल अपने स्वभाव के अनुसार आस-पास की गतिविधियों को ग्रहण कर लेता है जो बाद में उसके जीवन का आधार बन जाते हैं।
   vi. चेतन और अवचेतन मन

## Section B

2. i. मिश्रित वाक्य
   ii. संयुक्त वाक्य
   iii. सरल वाक्य
   iv. मिश्रित वाक्य
3. i. मैनाओं के द्वारा गीत सुनाया गया |
   ii. माँ से अभी भी खड़ा नहीं हुआ जाता |
   iii. बीमारी के कारण वह उठ नहीं पाता |
   iv. क्या अब चलें ?
4. i. **मैं**- सर्वनाम (उत्तम) पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक, 'जाऊँगा' क्रिया का कर्ता। पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, ' जाऊंगा' क्रिया का कर्ता ।
   ii. **साल-** जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, अधिकरण कारक।
   iii. **तुम्हारी-** सार्वनामिक विशेषण (मध्यम पुरुष), स्त्रीलिंग, बहुवचन, 'पुस्तकें' विशेष्य।
   iv. **किताबें-** जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्ता कारक 'रहती हैं' क्रिया का कर्ता।

जातिवाचक संज्ञा, किताब का बहुवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक ' रहती है' क्रिया का कर्ता।

5. i. जिस व्यक्ति को देखकर प्रेम की भावना जगे अर्थात् नायक-नायिका।
   ii. क्रोधित व्यक्ति की चेष्टा जैसे नेत्रों का लाल होना, दांत पीसना, होंठ चबाना, शस्त्र उठाना आदि ।
   iii. शृंगार रस ।
   iv. हास्य रस।

## Section C

6. i. हालदार साहब के मत से देशभक्तों का मखौल उड़ाने वाली कौम स्वार्थी होती हैं। ऐसी कौम कभी भी अपने देश का हित नहीं कर सकती, वह सिर्फ अपनी भलाई के विषय में सोचती है ।
   ii. हालदार साहब के मन में कस्बे में घुसने से पहले ये ख़याल आया कि नेताजी की मूर्ति तो वहीं होगी किन्तु कैप्टन की मृत्यु हो जाने के कारण उस पर चश्मा नहीं होगा ,क्योंकि मास्टर उसे लगाना भूल गया था। उन्होंने निश्चय किया कि चौराहे से गुजरते हुए उस ओर नहीं देखेंगे।
   iii. हालदार साहब उन देशवासियों के व्यवहार को सोचकर दुःखी हो रहे थे जिनके हृदय देशभक्ति की भावना से शून्य थे। जो देश पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले देशभक्तों का सम्मान करने के बजाय उनकी हँसी उड़ाते थे। ऐसे देश का भविष्य कैसा होगा यह सोचकर वे दुःखी थे।
7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. हमारे समाज में विधवा विवाह को शास्त्र सम्मत नहीं समझा जाता | लोग इसे स्वीकृति नहीं देते | बालगोबिन भगत इस प्रकार की प्रत्येक रूढ़िवादिता के विरोधी थे | उनकी मान्यता थी कि विधवा को भी अपना जीवन जीने का पूर्ण अधिकार है | भगत के द्वारा अपनी पतोहू के पुनर्विवाह के रूप में समाज की इसी समस्या का समाधान लेखक ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है |

   ii. अपनी नवाबी का परिचय देने के लिए नवाब साहब ने खीरे को खाने के स्थान पर उसकी फांकों को सूंघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया | इसके बाद उन्होंने इस प्रकार डकार ली मानों उनके लिए उसे सूंघना ही पर्याप्त है | इस सारे क्रियाकलाप को करने के बाद वे लेट गए जैसे बहुत थक गए हों | लेखक को दिखाने के लिए उन्होंने डकार भी ली |

   iii. फादर जैसे सौम्य तथा स्नेहिल स्वभाव के व्यक्ति हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के मार्ग में आने वाली समस्या तथा सवाल पर झुँझला उठते | हिन्दी भाषा से उन्हें विशेष लगाव और प्रेम था। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे।

   iv. मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व में पिताजी की अनेक अच्छाइयों और बुराइयों ने प्रवेश पा लिया था। पिताजी द्वारा बड़ी और गोरी बहन सुशीला की प्रशंसा करने के कारण उनके भीतर गहराई में हीन ग्रंथि ने जन्म ले लिया था | इस हीन भावना और कुंठा ने उनके आत्मविश्वास को हिला कर रख दिया था | पिताजी ने ही उनके मन में देशप्रेम की भावना जगाई थी |

v. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से सच्चे सुर की नेमत मांगते रहे क्योंकि वे एक सच्चे कलाकार थे | अपनी कला को पूर्ण करने की ललक उनमें सदा रहती थी | उनकी ईश्वर में सच्ची आस्था थी इसलिए वे ईश्वर से अपने सुरों को अधिक प्रभावशाली बनाने की मांग करते रहे |

8. i. उपर्युक्त पंक्तियां दोहा छंद में लिखी गयी है।

ii. इन पंक्तियों द्वारा परशुराम जी लक्ष्मण जी को यह चेतावनी दे रहे हैं कि रे नृप बालक लगता है निश्चित रूप से तुम्हारा काल निकट आ गया है,जिससे तुम अपनी वाणी को संभाल नहीं पा रहे हो अर्थात मेरा अपमान कर रहे हो | यह धनुष कोई साधारण धनुष नहीं है इसे त्रिपुरारी धनु के नाम से सारा संसार जानता है | परशुराम जी उन्हें इन कटु वचनों से उनके द्वारा किए गए अपराध के विषय में सचेत करना चाहते थे क्योंकि वे लक्ष्मण के ब्यंग्य वचनों से खिन्न भी थे ।

iii. इन पंक्तियों में उस धनुष की निम्नलिखित विशेषताएँ बत्ताई गई है :-

क ) यह साधारण धनुष नहीं है |

ख ) यह मेरे गुरु शिव का धनुष है |

ग ) इस धनुष को समस्त संसार त्रिपुरारि धनु के नाम से जानता है।

परशुराम जी ने लक्ष्मण जी को ऐसा इसलिए बताया है क्योंकि श्री राम ने उसे साधारण धनुष समझ कर उसे तोड़ने का अपराध किया है और उसे स्वीकार भी नहीं कर रहे है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. 'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो' कथन के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि फागुन के सौन्दर्य को देखकर कवि के भावुक ह्रदय में भी कल्पनाओं के पंख लग जाते हैं और वह उड़ान भरने लगता है | अर्थात उसका मन आनंदित हो जाता है |

ii. कवि ने बच्चे के शरीर की तुलना कीचड़ में उत्पन्न कमल से की है। जैसे कीचड़ में खिलने के बाद भी कमल अपनी सुंदरता से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, उसी प्रकार धूल-धूसरित होने के बाद भी बालक की छवि कवि के मन को मोह लेती है। बालक के शरीर को देख कर कवि को ऐसा लगता है कि मानों कमल तालाब को छोड़ कर आज उसकी झोपड़ी में ही खिल गए हों और उसके दर्शन से ही उसका मन तृप्त हो गया हो।

iii. शारीरिक स्थिति तो देखने में सुखी लगती है। मानसिक स्थिति अत्यधिक दु:खी होती है फिर वह छोटी-छोटी बातों पर दु:खी हो जाता है। कवि के अनुसार मनुष्य ने धन-दौलत, यश, वैभव,मान- सम्मान प्रतिष्ठा आदि के पीछे भाग -दौड़ कर इन सबको एकत्र कर लिया और अपने शरीर को सुखमय बना लिया,परंतु वास्तविक सुख तो मन की शांति का होता है। इन सबसे शारीरिक सुख मिल सकता है मानसिक नहीं। उसके मन में असमंजस की स्थिति बनी होने के कारण दुखों से लड़ने का साहस भी नहीं रह गया है इसलिए उसका मन दुखमय है।

iv.
- कन्यादान कविता में माँ के दु:ख की बात की गई है।
- क्योंकि वह अपनी पुत्री का कन्यादान कर रही है। तो उन्हें बहुत दुख हो रहा था क्योंकि उनको मालूम

है कि उनकी बेटी अभी इतनी सयानी नहीं हुई है जो ससुराल में जाकर वह अपना वैवाहिक जीवन सुख से व्यतीत कर सकें।

v. 'संगतकार कविता में नौसीखिया से अभिप्राय मुख्य गायक के बचपन के दिनों से है | जब उसने गायन सीखना शुरू किया था।

जब मुख्य गायक गाने की स्थायी का गान करते हुए संगीत में स्वर का विस्तार करते हुए कठिन तान में खो जाता है। vh संगीत के साथ स्वरों को पार कर अनहद की खोज में भटक जाता है, उस समय साहयक गायक ही गीत का चरण संभाले रखता है। वह साहयक ठीक मुख्य गायक के साथ ऐसे गायन करता है जैसे यात्री के पीछे छूटे हुए सामान को समेट रहा है। सहायक गायन की भूमिका ऐसी होती है मानो मुख्य गायक को उसके आरंभिक दिनों की याद दिला रहा है यानी जब उसने गायन सीखना शुरू किया था उन दिनों की याद दिलाता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. अपने बचपन में लेखक और उनके मित्रों की टोली किसी दूल्हे के आगे-आगे जाती हुई ओहारदार पालकी को देख लेते तो बड़े ही जोर से चिल्लाते | एक बार ऐसा करने पर एक बूढ़े वर ने उन सबको बड़ी दूर तक खदेड़कर ढेलों से खूब मारा | उसे याद कर लेखक कहता है कि न जाने किस ससुर ने वैसा जमाई ढूँढ़ निकाला था | उस खूसट-खब्बीस की सूरत लेखक नहीं भुला पाया। लेखक ने वैसा घोड़मुँहा आदमी कभी नहीं देखा।

ii. रानी ऐलिज़ाबेथ के दर्जी की परेशानी का कारण रानी के पहनावे को लेकर था कि जब रानी हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे पर जाएँगी तो वह क्या पहनेंगी? उसकी परेशानी तर्कसंगत है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने काम की प्रशंसा चाहता है। वह चाहती थी कि उसके कार्य को लोग देखें और सराहें। यदि उसके कार्य को भारतीय उपमहाद्वीप में सराहा गया तो राज परिवार में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी,आर्थिक फायदा होगा साथ ही साथ दुनिया में नाम होगा ।

iii. आज की पीढ़ी प्रकृति के साथ निरंतर छेड़छाड़ कर रही है। उसका हस्तक्षेप प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ रहा है। प्रकृति माँ के समान हमारा पालन-पोषण करती है। उसी प्रकृति से हम अधिक-से-अधिक पाना चाहते हैं इसलिए हम उसका अधिकाधिक दोहन कर रहे हैं।
आज की पीढ़ी अधिक-से-अधिक पेड़ों को काटकर वनों का सफाया कर रही है जिसके कारण जंगली जीवों का जीवन संकट में पड़ गया है। शहर कंक्रीट के जंगल में तबदील होते जा रहे हैं। सभी स्वार्थी बन धरती का एक-एक कोना छीनने में लगे हैं। वैज्ञानिक उपकरणों से अनेक दूषित हवाएँ वायु को प्रदूषित कर धरती का तापमान बढ़ा रही हैं। इससे मौसम चक्र बिगड़ गया है । इसे शीघ्रता से रोकना होगा अन्यथा धीरे-धीरे मानव का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। नई पीढ़ी को प्रकृति की तरफ़ मुड़ना होगा, वनों व जंगली जीवों को संरक्षण प्रदान करना होगा। पूर्ण रूप से प्राकृतिक जीवन जीना होगा। विज्ञान का उचित और विवेकपूर्ण प्रयोग करना होगा। प्रकृति से अधिक पाने की लालसा छोड़नी होगी तभी प्रकृति माँ बनकर हमारा पालन-पोषण करेगी अन्यथा मानव ही नहीं, समस्त प्राणियों का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा और वह दिन दूर नहीं जब धरती पर जीवन एक स्वप्न बन के रह

जाएगा।

## Section D

11. **प्रस्तावना:-**

संसार में शायद ही कोई ऐसा प्राणी होगा जिसकी कोई अभिलाषा न हो | किसी को यश की चाह होती है, किसी को धन की चाह होती है, कोई लेखक बनना चाहता है तो कोई फ़िल्मी अभिनेता | कोई डॉक्टर ओर इंजिनियर बनकर अपार धन-दौलत कमाना चाहता है तो कोई सैनिक बनकर देशहित के लिए अपने प्राणों का बलिदान करना चाहता है |

**मेरी आकांक्षा:-**

प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होता है कि वो अपने जीवन में कोई सफल मुकाम प्राप्त करे | मुझे दूसरों को पढ़ाना अच्छा लगता है इसलिए मेरी प्रबल आकांक्षा है कि मैं डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक बनूं। मेरे पिताजी भी एक अध्यापक हैं इसलिए अध्यापन का गुण तो मुझे विरासत में मिला है | वे इंटर कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं डिग्री कॉलेज में हिन्दी प्राध्यापक बनूँ। बचपन से ही मुझे पढ़ने-पढ़ाने का शौक है | मैं घर पर भी अपने भाई-बहनों को पढ़ाता हूँ | डिग्री कॉलेज के अध्यापकों का समाज में मान-सम्मान तो है ही, साथ ही उनका वेतन भी आकर्षक होता है। यही नहीं अपितु उन्हें समाज में भी वे प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं तथा उन्हें 'जॉब सैटिस्फेक्शन' भी मिलता है। इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण बात तो ये है कि एक अच्छा अध्यापक बच्चों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें उन्नति की राह पर ले जाता है | राष्ट्र निर्माण का उत्तरदायित्व अध्यापक पर ही निर्भर करता है इसलिए मैंने प्राध्यापक बनने का विचार किया।

**आवश्यक योग्यता:-**

प्राध्यापक बनने के लिए हाईस्कूल से लेकर एम. ए. तक 55 प्रतिशत अंक होने अनिवार्य हैं। मेरे हाईस्कूल से लेकर एम. ए. तक, औसतन 70 प्रतिशत अंक हैं तथा प्रत्येक परीक्षा मैंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। प्राध्यापक बनने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) की नेट परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है क्योंकि उच्च शिक्षा सेवा आयोग उन्हीं अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाता है जिन्होंने नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो।

**तैयारी:-**

पिछले दो वर्ष से मैं नेट परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ। यूजीसी प्रतिवर्ष जून और दिसम्बर में नेट परीक्षा का आयोजन करती है। मैं एक बार इस परीक्षा में बैठ भी चुका हैं परन्तु असफल रहा अब पुनः अपनी कमियों को दूर कर इस बार दिसम्बर में आयोजित होने वाली परीक्षा में बैठूँगा | मुझे अपनी तैयारी पर पूरा भरोसा है और इस बार की नेट परीक्षा पास कर लूंगा। 'नेट' पास करने के बाद मुझे निश्चय ही प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति मिल जाएगी | देश की उन्नति में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि वही बच्चों का सही मार्गदर्शन करता है | एक अध्यापक बनकर मैं देश की भावी पीढ़ी का दिशा निर्देशन करने में सफलता प्राप्त कर सकूँगा | ऐसा करके मैं अपनी अभिलाषा पूर्ण कर सकूँगा।

**उपसंहार:-**

अपने परिश्रम और लगन से प्राध्यापक अनेक बालकों के जीवन को उचित मार्ग पर ले जाकर उन्हें जीने योग्य बनाते हैं | अतः यह बड़ा ही पुनीत कर्म है |

**OR**

"पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले" -हरिवंश राय बच्चन
लक्ष्यहीन जीवन स्वच्छंद रूप से सागर में छोड़ी हुई डगमगाती हुई नाव है जो पानी में हिचकोले खाती हुई या तो भंवर में डूब जाती है या चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाती है किन्तु किनारे नहीं पहुँच पाती । इसप्रकार जीवन भी नाव के समान होता है जिसका लक्ष्य तय करना मानव का प्रथम कर्तव्य है। मेरे जीवन का स्वप्न सफल डाक्टर बनने का है जिसे मैं येन-केन प्रकारेण साकार करना चाहता हूँ।
जब मैं डॉक्टरों के शुभ कार्य को देखता हूँ तो मेरी डॉक्टर बनने की आकांक्षा तीव्र हो जाती है। डॉक्टर जब रोते हुए गरीब को सांत्वना देकर, परामर्श देकर, उसके रोग का इलाज कर उसे नवजीवन प्रदान करता है तब उनके चेहरे पर छाई मुस्कुराहट और संतोष देख कर मेरी इच्छा होती है कि मैं भी डॉक्टर बनूँ।
डॉक्टरी शिक्षा का पाठ्यक्रम पूरा करने हेतु विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश लेकर कठिन परिश्रम करना होगा। उसके बाद मुझे प्रवेश लेने के लिए प्रतियोगी परीक्षा भी उत्तीर्ण करनी होगी। हालांकि यह पढ़ाई बहुत महँगी है किन्तु लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत कुछ सहन करना पड़ेगा। मेरे इस लक्ष्य प्राप्ति में मुझे मेरे परिवार वालों ने भी सहयोग करने का आश्वासन दिया जिसने मेरे मनोबल को बहुत बढ़ा दिया। मैंने सोचा कि मैं कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से पीड़ित रोगियों के लिए विशेष कार्य करूँगा।
मेरी दृष्टि में डॉक्टर बनना सबसे बड़ी समाज-सेवा और देश-सेवा है। मैं जनता की भलाई के लिए ही डॉक्टरी शिक्षा का सदुपयोग करूंगा। देश की रक्षा करने वाले नागरिकों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना देश की एक महान सेवा है। किसी ने ठीक ही कहा है- “पहला सुख निरोगी काया" - नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करना सब उन्नति का मूल है। इसके लिए डॉक्टर की सेवा सर्वोपरि है।
मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि मैं अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर करूँगा। यदि मैं जनता की तन-मन से सेवा करूंगा तो मेरी कीर्ति चहुँ ओर फैलेगी। रोते हुए व्यक्ति के आँसू पोंछना, कराहते हुए व्यक्ति का दुःख दूर करना, जख्मी घावों पर महरम लगाना, जीवन में ऊबे हुए निराश व्यक्ति को नई आशा देना आदि भावनाओं से अनुप्रमाणित होना मेरा परम कर्तव्य होगा, तभी मेरी डॉक्टरी शिक्षा को ध्येय पूर्ण हो सकेगा और मेरा सपना अवश्य साकार होगा।

**OR**

**प्रस्तावना:-**

संसार में शायद ही कोई ऐसा प्राणी होगा जिसकी कोई अभिलाषा न हो | किसी को यश की चाह होती है, किसी को धन की चाह होती है, कोई लेखक बनना चाहता है तो कोई फ़िल्मी अभिनेता | कोई डॉक्टर ओर इंजिनियर बनकर अपार धन-दौलत कमाना चाहता है तो कोई सैनिक बनकर देशहित के लिए अपने प्राणों का बलिदान करना चाहता है |

**मेरी आकांक्षा:-**

प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होता है कि वो अपने जीवन में कोई सफल मुकाम प्राप्त करे | मुझे दूसरों को पढ़ाना अच्छा लगता है इसलिए मेरी प्रबल आकांक्षा है कि मैं डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक बनूं। मेरे पिताजी भी एक अध्यापक हैं इसलिए अध्यापन का गुण तो मुझे विरासत में मिला है | वे इंटर कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं डिग्री कॉलेज में हिन्दी प्राध्यापक बनूँ। बचपन से ही मुझे पढ़ने-पढ़ाने का शौक है | मैं घर पर भी अपने भाई-बहनों को पढ़ाता हूँ | डिग्री कॉलेज के अध्यापकों का समाज में मान-सम्मान तो है ही, साथ ही उनका वेतन भी आकर्षक होता है। यही नहीं अपितु उन्हें समाज में भी वे प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं तथा उन्हें 'जॉब सैटिस्फेक्शन' भी मिलता है। इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण बात तो ये है कि एक अच्छा अध्यापक बच्चों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें उन्नति की राह पर ले जाता है | राष्ट्र निर्माण का उत्तरदायित्व अध्यापक पर ही निर्भर करता है इसलिए मैंने प्राध्यापक बनने का विचार किया।

**आवश्यक योग्यता:-**

प्राध्यापक बनने के लिए हाईस्कूल से लेकर एम. ए. तक 55 प्रतिशत अंक होने अनिवार्य हैं। मेरे हाईस्कूल से लेकर एम. ए. तक, औसतन 70 प्रतिशत अंक हैं तथा प्रत्येक परीक्षा मैंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। प्राध्यापक बनने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) की नेट परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है क्योंकि उच्च शिक्षा सेवा आयोग उन्हीं अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाता है जिन्होंने नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो।

**तैयारी:-**

पिछले दो वर्ष से मैं नेट परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ। यूजीसी प्रतिवर्ष जून और दिसम्बर में नेट परीक्षा का आयोजन करती है। मैं एक बार इस परीक्षा में बैठ भी चुका हैं परन्तु असफल रहा अब पुनः अपनी कमियों को दूर कर इस बार दिसम्बर में आयोजित होने वाली परीक्षा में बैठूँगा | मुझे अपनी तैयारी पर पूरा भरोसा है और इस बार की नेट परीक्षा पास कर लूंगा। 'नेट' पास करने के बाद मुझे निश्चय ही प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति मिल जाएगी | देश की उन्नति में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि वही बच्चों का सही मार्गदर्शन करता है | एक अध्यापक बनकर मैं देश की भावी पीढ़ी का दिशा निर्देशन करने में सफलता प्राप्त कर सकूँगा | ऐसा करके मैं अपनी अभिलाषा पूर्ण कर सकूँगा।

**उपसंहार:-**

अपने परिश्रम और लगन से प्राध्यापक अनेक बालकों के जीवन को उचित मार्ग पर ले जाकर उन्हें जीने योग्य बनाते हैं | अतः यह बड़ा ही पुनीत कर्म है |

12. पटेल नगर ,नई दिल्ली
    २४ मार्च २०१९
    प्रिय मित्र
    २३ मार्च की शाम हमारे पारिवारिक मित्र बबलू से यह दु:खद समाचार मिला है कि आपकी पूजनीया माताजी का

आकस्मिक निधन हो गया है।अचानक मिले इस समाचार पर तो पहले मुझे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि अभी दो दिन पहले ही वह मुझे बाजार में मिली थी और हमने काफी देर तक बातचीत भी की थी | उन्होंने बताया था कि उनका स्वास्थ्य अच्छा है किन्तु यह समाचार को सुन कर मैं हतप्रभ रह गया । ईश्वर की इच्छा के आगे किसी का कोई वश नहीं है। इस दुःखद घटना पर मैं हार्दिक शोक व्यक्त करता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मृत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे तथा परिवार को इस वज्र आघात को सहने की शक्ति प्रदान करे।

आपका मित्र

गौरव

**OR**

शिवपुरी, नई दिल्ली

२४ मार्च २०१९

प्रिय भाई

सोनू

सस्नेह नमस्कार

आशा है आप सपरिवार कुशल से होगें। आप को तो पता ही होगा कि इस बार हाईस्कूल की परीक्षा हमने बहुत अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण कर ली है | लेकिन कस्बे में कोई अच्छा विद्यालय न होने के कारण मैंने नए विद्यालय में प्रवेश ले लिया है। नगर का यह विद्यालय हमारे कस्बे के विद्यालय से बहुत बड़ा एवं भव्य है। बड़े-बड़े क्लास रूम स्थायी फर्नीचर एवं खेल का मैदान तथा बड़ा-सा पुस्तकालय इस कॉलेज में मुझे देखने को मिला। वास्तव में इस कॉलेज को देखकर हमें पता चला कि विद्यालय कैसा होना चाहिए। पढ़ाई का माहौल भी बहुत अच्छा है। पहले सप्ताह ही सभी कक्षाएँ निर्धारित समय पर लगने लगी हैं तथा कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति भी लगभग नब्बे प्रतिशत रहती है। प्रधानाचार्य एवं सभी अध्यापकों का रवैया सहयोग पूर्ण है। हमें परिचय पत्र एवं पुस्तकालय कार्ड भी मिला है। हम कोई सी दो पुस्तकें घर ले जा सकते हैं तथा 15 दिन के भीतर उन्हें जमा कर पुनः दो पुस्तकें पुस्तकालय से ले सकते हैं।

सभी अध्यापक अपने विषय के विद्वान हैं और हमारे पूछे गए प्रश्नों का उत्तर स्नेह पूर्वक समझाकर देते हैं। यही नहीं अपितु प्रत्येक छात्र के लिए किसी एक मैदानी खेल में भाग लेना भी अनिवार्य है। मैने फुटबॉल की टीम में अपना नाम लिखाया है जो मुझे विशेष प्रिय हैं। खेल अध्यापक हमें बड़े प्रेम से ट्रेनिंग देकर खेल में पारंगत बना रहे हैं। विद्यालय का अनुशासन और नियमबद्धता प्रशंसनीय है। चपरासी से लेकर प्रत्येक चाहे वह विद्यार्थी हो या अध्यापक अपना कार्य रुचि एवं लगन से करते हैं। यहाँ छात्रवृत्ति प्रदान करने की भी परंपरा है। समय-समय पर कार्यशालाएँ भी छात्रों के लिए चलती रहती हैं ताकि उन्हे भविष्य में उसका लाभ मिल सके।

यदि आप चाहे तो अभी कुछ सीटें कक्षा-11 में खाली हैं | चाचा जी से अनुमति लेकर यदि आप भी आ जाएँ तो दोनों भाई एक साथ एक कमरा लेकर रह लेंगे और साथ-साथ परीक्षा की तैयारी भी हो जाएगी। चाची जी को मेरा प्रणाम और छोटी बहिन तृप्ति को स्नेह, तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका प्रिय

राहुल

13.

**हर्बल ब्यूटी क्रीम**

आपके चेहरे को दे एक बहुत ही खूबसूरत निखार

"खिला-खिला चेहरा झलकता नूर,

ऐसा लगे चली आ रही हूर।"

सुंदरता का एक ही राज हर्बल ब्यूटी की मसाज

"""""""दो की खरीदारी पर हर्बल फेस वॉश फ्री"""""""

**OR**

**कीमत केवल 999 रूपये (6 पैकेट)**

"नाखूनों की शान बढ़ाती

सुंदरता में चार चाँद लगाती

सबके मन को लुभाती

और

हजारों में आपकी पहचान

अलग ही बनातीं है।"

**""""स्टार नेलपॉलिश""""**

**आकर्षक कलर्स में उपलब्ध**

**जो आपको अपनी सुन्दरता का एहसास कराएं**

**सस्ती सुंदर और टिकाऊ**

**(दुकान क्रमांक 77 सरोजिनी नगर नई दिल्ली)**